शब्द 1866 (जर्मनी) अर्नेस्ट हैकल

पर्यावरण भूगोल :

शब्द Ecology. पारिस्थितिकी (ग्रीक भाषा)

किसी भी जैव समुदाय का अपने अजीव वातावरण के साथ गहरा अन्तर्सम्बन्ध होता है। जीव समुदाय तथा अजीव वातावरण के सम्बन्ध को पारितंत्र कहते हैं। जैव-अजैव दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।

- जैविक घटक
  - जंतु, पेड़-पौधे
    - उत्पादक
    - उपभोक्ता
    - अपघटक
- अजैविक घटक (Abiotic)
  - अकार्बनिक पदार्थ
  - कार्बनिक पदार्थ
  - जलवायवीय कारक

1. उत्पादक (Producers) - भोजन बनाने की क्षमता केवल स्वपोषी अर्थात हरे पौधों में ही होती है, इनको उत्पादक कहते हैं। इनमें क्लोरोफिल हरा वर्णक होता है।

2. उपभोक्ता (Consumers) - वे सभी जीव जो अपना भोजन स्वयं नहीं बना पाते हैं बल्कि अपने भोजन के लिए दूसरों पर निर्भर रहते हैं उपभोक्ता कहलाते हैं। ये परपोषी हैं जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में पौधों द्वारा बनाये भोज्य पदार्थों का उपभोग करते हैं।

(1) प्राथमिक उपभोक्ता ⇒ शाकाहारी जन्तु (ये अपना भोजन पौधों से प्राप्त करते)

(2) द्वितीय उपभोक्ता ⇒ मांसाहारी जन्तु - सांप,

(3) तृतीयक उपभोक्ता ⇒ द्वितीयक श्रेणी के जन्तु को खाने वाले जन्तु
मोर, बाघ, बाज, गिद्ध

(4) सर्वाहारी
↳ सब कुछ खाने वाले जन्तु - मनुष्य, कुत्ता

(3) अपघटक -

अपघटक (Decomposers)

↳ ये सूक्ष्म जीव हैं जैसे मृतजीवी कवक व जीवाणु ये मृत उत्पादक (मृत पौधों) एवं उपभोक्ताओं (जन्तुओं) के मृत शरीर को सरल यौगिकों में अपघटित कर देते हैं।

ये मृत जैव अवशेषों का अपमार्जन करते हैं अतः अपमार्जक भी कहते हैं।

(1) अकार्बनिक पदार्थ (Inorganic substances) – इसमें तत्व फॉस्फोरस, गंधक, लोहा, कैल्शियम, मैग्नीशियम आदि हैं तथा जल तथा वायुमण्डल की गैसें जैसे ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, कार्बन डाइऑक्साइड आदि शामिल हैं।

(2) कार्बनिक पदार्थ (organic substances) – इनमें कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, लिपिड आदि शामिल हैं। विभिन्न अकार्बनिक पदार्थ जैविक घटक में प्रवेश करके कार्बनिक पदार्थ में बदल जाते हैं। ये मृतक जन्तुओं एवं पौधों के शरीर से प्राप्त होते हैं। यूरिया, ह्यूमस आदि भी जीवधारियों के शरीर में मिलते हैं। अपघटक इन पदार्थों को अकार्बनिक पदार्थों में अपघटित कर देते हैं जिन्हें पौधे पुनः ग्रहण कर लेते हैं।

(3) जलवायवीय कारक (climatic factors) – इनमें ताप, प्रकाश, वायु आदि शामिल हैं। इनमें सूर्य, ऊर्जा का प्रमुख स्रोत है। इसका प्रभाव अन्य कारकों पर भी पड़ता है।